रामचन्द्रिका में चरित्र-चित्रण

चरित्र-चित्रण का अर्थ होता है काव्य में वर्णित पात्रों के गुण-दोषों का पर्यवेक्षण करना; अर्थात् उनके चरित्र को आँकना। चरित्रांकन की दो विधियाँ होती हैं—प्रत्यक्ष चित्रण-विधि और अप्रत्यक्ष अथवा परोक्ष चित्रण-विधि। प्रत्यक्ष चित्रण-विधि में काव्यकार स्वयं पात्रों के चरित्र का विश्लेषण तथा वर्णन करता है। प्रत्यक्ष चित्रण अनेक प्रकार से किया जा सकता है; किन्तु इनमें निम्नलिखित चार विधियाँ प्रमुख हैं—

1. प्रकाशन विधि, 2. वर्णनात्मक विधि, 3. मनोविश्लेषण विधि, 4. अन्य पात्रों के मुख से।

अप्रत्यक्ष चित्रण-विधि में काव्यकार अपने मुख से किसी भी पात्र के गुण-दोषों का वर्णन नहीं करता। वह तो केवल उनके क्रिया-कलापों, सवादों तथा दूसरे पर पड़े उनके प्रभावों का वर्णन करता है जिससे सम्बन्धित पात्रों के चरित्र उभरते रहते हैं। अप्रत्यक्ष चित्रण प्रायः तीन प्रकार से किया जा सकता है—

1. अभिभाषण द्वारा, 2. क्रिया-कलापों द्वारा, 3. अन्य पात्रों पर पड़े प्रभाव द्वारा।

रामचन्द्रिका में पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय उपर्युक्त सभी विधियों का आश्रय लिया गया है। इसमें वर्णित पात्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—पुरुष और नारी-पात्र। पुरुष-पात्रों में राम, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, अंगद, रावण आदि और स्त्री पात्रों में सीता प्रमुख हैं।

राम—रामचन्द्रिका के नायक हैं। केशव के पूर्व राम का चरित्र-चित्रण महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास द्वारा पूर्णरूपेण अंकित हो चुका था। इन दोनों काव्यकारों ने राम को जिस गौरवमय और मर्यादापूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया, केशव उस स्थान की रक्षा नहीं कर पाये हैं। इनके राम में परम्परागत रामत्व भी है और युगीन प्रभाव के कारण अरामत्व भी।

जिस प्रकार वाल्मीकि और तुलसी के राम में पितृ भक्ति है, उसी प्रकार केशव के राम भी पितृ भक्ति से सम्पन्न हैं। जब राम के अभिषेक की तिथि निकट आती है तो कैकेयी महाराज दशरथ से राम के बनवास का वर माँग लेती है। राम को जब इस समाचार का पता चलता है तो वे तुरन्त अयोध्या छोड़कर बन जाने के लिए उद्यत हो जाते हैं—

'उठि चले बिपिन कहँ सुनत राम। तजि तात मातु तिय बन्धु धाम॥'

राम सौन्दर्य के आगार हैं। स्थान-स्थान पर राम के सौन्दर्य का वर्णन कवि ने किया है। छठे प्रकाश में अनेक छन्दों में राम के सौन्दर्य का वर्णन करके भी कवि अपनी असमर्थता इन शब्दों में स्वीकार करता है—

'को बरनै रघुनाथ छबि, केसव बुद्धि उदार।
जाकी किरपा सोभिजति, सोभा सब संसार।

जिस राम की कृपा से ही समस्त संसार की शोभा सुशोभित है, भला उनकी शोभा का वर्णन कौन कर सकता है।

महर्षि वाल्मीकि और तुलसीदास दोनों ने राम को विष्णु का अवतार मानकर उनमें अनेक प्रकार की शक्तियों का समावेश किया है। केशव ने भी राम में शक्तियों की नियोजना करते समय उनके रामत्व पर बराबर ध्यान रक्खा है। इनकी शक्तियों का अर्थात् इनके रामत्व का वर्णन हनुमान, विभीषण और अंगद आदि के द्वारा कवि ने विशेष रूप से करवाया है। हनुमान-रावण-संवाद मे हनुमान राम की शक्ति का संकेत देते हैं—

'रे कपि कौन तू? अच्छ को घातक दूत बली रघुनंदन जू को।
को रघुनन्दन रे? त्रिसिरा-खरदूषन—दूषन भूषन भू को॥
सागर कैसे तर्‌यो? जस गोपद, काज कहाँ? सिय चोरहि देखो।
कैसे बंधायो? जु सुन्दर तेरी छुई दृग सोवत पातक लेखो॥'

इसी प्रकार से रघुनाथ-प्रताप की बातें अंगद रावण को बताते हैं—

'सिंधु तर्‌यो उनको बनरा, तुम पै धनुरेख गई न तरी।
बांदर बांधत सो न बन्ध्यो, उन बारिधि बांधि कै बाट करी॥
श्री रघुनाथ प्रताप की बात, तुम्हें दसकंठ न जानि परी।
तेलहु तूलहु पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराइ जरी॥'

राम के ब्रह्मत्व का वर्णन ऋषियों ने किया है। अगस्त्य मुनि राम की स्तुति करते हुए कहते हैं—

'जदपि जग करता, पालक हरता, परिपूरन बेदन गाये।
अति तदपि कृपा करि, मानुष बपु धरि, चल हमसों पूछन आये॥'

अत्रि ऋषि भी राम के ब्रह्मत्व की अभिव्यक्ति इन शब्दों में करते हैं—

'जोग जाग हम जा लग गहियो। रामचंद्र सबको फल लहियो॥'

इस प्रकार हम देखते हैं कि राम की जिस शक्ति का केशव तथा केशव के पात्रों ने वर्णन किया है, वह ब्रह्म-शक्ति है।

महर्षि वाल्मीकि और तुलसी ने राम के चरित्र-चित्रण में मर्यादा का निरन्तर ध्यान रक्खा है, किन्तु केशव इस मर्यादा का निर्वाह नहीं कर पाये हैं, फलतः इनके राम सहिष्णु न रहकर क्रोधी बन गये हैं। जब भी क्रोध का कोई अवसर आता है, राम की भृकुटि तन जाती है और वे साधारण पात्र की भाँति क्रोध से उन्मत्त हो उठते हैं। रामचन्द्रिका में ऐसे अनेक स्थल हैं, जहाँ राम का क्रोध चरम सीमा पर दिखाई देता है।

शिव-धनुष के भंग हो जाने पर जब परशुराम राम का मार्ग रोक लेते हैं और रघुवंशियों के वध की बात करते-करते महिष विश्वामित्र की भी निन्दा कर बैठते हैं तो गुरु-निन्दा को सुनकर राम आपे से बाहर हो जाते हैं और परशुराम की भर्त्सना इन शब्दों में करते हैं—

'भगन कियो भव धनुष सात तुमको अब सालौं।
नष्ट करौं बिधि सृष्टि ईस आसन ते चालौं॥
सकल लोक संहरहुँ सेस सिर ते धर डारौं।
सप्त-सिन्धु मिलि जाहि होइ सबही तम भारौं॥
अति अमल जोति नारायनी कहि केसब बुधि जाय बर।
भृगुनंद संभार कुठारु हौं कियो सरासन युक्त सर॥'

इसी प्रकार का एक अन्य अवसर तब आता है जब लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं और विभीषण राम को यह बताते हैं कि अरुणोदय होते ही इनका देहान्त हो जायेगा। राम इस बात को सुनकर क्रुद्ध होकर कहते हैं—

'करि आदित्य अदृष्ट नष्ट जम करौं अष्ट बसु।
रुद्रन बोरि समुद्र करौं गंधर्व सर्ब पसु॥
बलित अबेर कुबेर बलिहिं गहि लेउ इन्द्र अब।
बिद्या धरन अबिद्य करौं बिन सिद्धि सिद्ध सब॥
निजु होहि दा स दिति की अदिति अनिल अनल मिटि जाय जल।
सुनि सूरज, सूरज उबत हो करौं असुर संग्राम बल॥'

महाक्रोधी के अतिरिक्त केशव के राम विलासी और शृंगारिक भावनाओं से युक्त हैं। सच पूछा जाय तो केशव के राम का यही रूप प्रतिपाद्य है, क्योंकि 'रामचन्द्र की चन्द्रिका' की पूर्ण आभा रामचन्द्रिका के उत्तरार्द्ध में देखने को मिलती है। वाल्मीकि और तुलसी ने राम का पति-रूप भी आदर्शमयी मर्यादा के अन्तर्गत ही प्रस्तुत किया है, किन्तु केशव के राम पर इस प्रकार की मर्यादा का कोई बंधन नहीं है। ये स्त्रैण पुरुषों की भाँति सीता की थकावट को अपने वल्कल की हवा से दूर करते हैं—

'मग को स्रम श्रीपति दूर करैं सिय को सुभ बाकल आंचल सों।'

रावण-वध के पश्चात् ये हनुमान से कहते हैं—

'सब भूषन भूषित कै सुभ गीता। हमको तुम बेगि दिखावहु सीता॥'

'हमको तुम बेगि दिखावहु सीता' से जो आकुलता व्यक्त है, वह किसी कामाचारी की आकुलता से कम नहीं है।

राज्याभिषेक हो जाने के पश्चात् तो राम का विलासी रूप बिल्कुल ही स्पष्ट हो जाता है। रीतिकालीन विलासी राजाओं की दिनचर्या और राम की दिनचर्या में कोई अन्तर ही दिखलाई नहीं देता। राम कभी चौगान खेलने जाते हैं तो कभी सीता के साथ उन्मादक वाटिकाओं की सैर करते हैं, कभी रनिवास की सुन्दरियों के साथ जल-क्रीड़ा करते हैं, कभी दरबार में बैठकर नाच-गाने का आनन्द लेते हैं और कभी शुक से सीता की दासियों के सौन्दर्य का वर्णन बड़े चाव से सुनते हैं।

भारतीय जनता के मन में जिस राम के प्रति गहन आस्था एवं आदर्शवादिता सुदृढ़ स्थान बना चुकी है, उसे राम का यह चरित्र कैसा लगेगा, संस्कारी हृदय पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं। न जाने केशव ने जनता की चिर-संजोई आस्था पर इतना तीव्र कुठाराघात क्यों किया है?

भरत—केशव के भरत की वाल्मीकि और तुलसी के भरत से भिन्न हैं। वाल्मीकि और तुलसी के भरत में जो साधुता, समय एवं विनम्रता है, उसका केशव के भरत में नितांत अभाव है। केशव के भरत एकदम उग्र प्रवृत्ति के हैं। इनकी यह प्रवृत्ति, सर्वप्रथम परशुराम-भेंट के समय दृष्टिगोचर होती है। जब परशुराम राम को मारने की बार-बार प्रतिज्ञा करते हैं तब भरत क्रुद्ध होकर कह उठते हैं—

बोलत कैसे, भृगुपति सुनिये, सो कहये तन मन बनि आवै।
आदि बड़े हो, बड़प्पन राखिए, जा हित तू सब जग जस पावै।।
चंदनहूँ मैं अति तन घसिए, आगि उठै यह गुनि सब लीजै।
हैहय मारो, नृपजन संहरे, सो जस लै किन जुग जुग जीजै।।

केशव के भरत की साधुता पर स्वयं राम को विश्वास नहीं है, इसलिए तो वे वन-गमन के समय लक्ष्मण को समझाते हुए कहते हैं—

'आय भरत्थ कहा धौं करैं जिय भाय गुनौ।
जो दुख देय तो लै उदगों यह सीख सुनौ।।

भरत की प्रवृत्ति इतनी उग्र है कि वे मर्यादा का ध्यान नहीं रखते। जब चित्रकूट पर जाकर वे राम को लौटा लाने में असमर्थ हो जाते हैं तो राम से कहते हैं—

'मद्यपान-रत तिय जित होई। सन्निपात युत बातुल जोई।
देखि देखि जिनको सब भागैं। तासु बैन हनि पाप न लागैं।।'

इन पंक्तियों में वे अपने पिता को 'औरत का गुलाम' बता रहे हैं जो भरत के मुँह से शोभा नहीं देता और उनके चरित्र को बहुत नीचे धरातल पर ला खड़ा करता है।

जब राम सीता को त्याग देते हैं और भरत को आज्ञा देते हैं कि वह उसे वन में छोड़कर चला आये तो भरत राम को भी फटकारने से नहीं चूकते—

'वा माता वैसे पिता सों भैया पाय।
भरत भयो अपवाद को भाजन भूतल आय।।'

कहने का भाव यह है कि भारतीय जनता में अपनी जिस साधुता और विनयशीलता के कारण भरत कंठहार बने हुए हैं, वह केशव के भरत में नहीं हैं। केशव के भरत उग्र और क्रोधी भी हैं।

लक्ष्मण—तुलसी के लक्ष्मण की भांति केशव के लक्ष्मण में भी राम के दास्य भावना प्रारम्भ से लेकर अन्त तक बनी रहती है। जब राम वन को जाने लगते हैं तो लक्ष्मण भी उनके साथ चलने के लिये तैयार हो जाते हैं, किन्तु राम उन्हें अपने साथ न ले जाकर भरत के शासन में ही रहने की आज्ञा देते हैं। लक्ष्मण किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, क्योंकि वे भरत के शासन में नहीं रहना चाहते, राम के साथ वन जाना चाहते हैं। राम की आज्ञा का किस प्रकार उल्लंघन करें, यह समस्या उनके सामने आ खड़ी होती है। और कोई उपाय न देखकर वे राम से कहते हैं—

'सासन मेटो जाय क्यों, जीवन मेरे हाथ।
ऐसी कैसे बूझिये, घर सेवक बन नाथ।।'

वाल्मीकि और तुलसी के लक्ष्मण की अपेक्षा केशव के लक्ष्मण कम उग्र और क्रोधी हैं। 'रामचरितमानस' में परशुराम को खरी-खोटी केवल लक्ष्मण सुनाते हैं, किन्तु रामचंद्रिका में लक्ष्मण को भरत और राम से भी कम बोलने का अवसर मिलता है। न इनकी वाणी में इतनी स्पष्ट उग्रता है। जितनी वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस में हैं। ये परशुराम से कहते हैं—

'क्षत्रिय है गुरु लोगन को प्रतिपाल करैं।
भूलिहु तौ तिनके गुन औगुन जौ न धरैं।।
तौ हमको गुरुदोष नहीं अब एक रती।
जो अपनी जननी तुम ही सुखपाय हसी।।'

अर्थात् जब तुमने आनन्दपूर्वक अपनी माता की हत्या कर दी तो तुम्हें मारने में किसको दोष लग सकता है? कितना मर्मस्पर्शी व्यंग्य है।

लक्ष्मण के गुणों का वर्णन राम ने इस प्रकार किया है—

'पौरिया कहौ कि प्रतीहार कहौं किधौं प्रभु,
पुत्र कहौं मित्र किधौं पन्थी सुखदानिये।
सुभट कहौं कि सिष्य दास कहौं किधौं दूत,
केसोदास हाथ को हथ्यार उर आनिये।
नैन कहौं किधौं तन मन किधौं तनमान,
बुद्धि कहौं किधौं बल-बिक्रम बखानिये
देखिबे को एक हैं अनेक भांति कीन्हीं सेवा।
लखन के मातु कौन-कौन गुन मानिये।।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि लक्ष्मण के चरित्र की परम्परागत विशेषताओं को अक्षुण्ण बनाये रखने में रामचन्द्रिकाकार सफल हुआ है।

हनुमान—वाल्मीकि और तुलसी ने हनुमान के चरित्र की प्रतिष्ठा जिस स्तर पर की, केशव उस स्तर को सुरक्षित नहीं रख पाये। तुलसी के हनुमान राम के अनन्य भक्त हैं, किन्तु केशव के हनुमान में स्वार्थ की भावना है। जब राम सीता को खोजते हुए ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचते हैं तो वहाँ उनकी हनुमान से भेंट होती है। हनुमान सीता अपहरण का समाचार सुनकर राम से कहते हैं—

'या गिरि पर सुग्रीव नृप, ता संग मंत्री चारि।
बानर लई छड़ाय हिय, दीन्हीं बालि निकारि।।
ताकहँ जो अपनो करि जानो। पारउ बालि बिनै यह मानो।।
राज देउ दै वाकी तिया को। हम देहिं बताय सिया को।।'

हनुमान के ये शब्द इन्हें उन स्वार्थलोलुप मनुष्यों की श्रेणी में ला बिठाते हैं जिनके मन में परोपकार अथवा परदुखकातरता की भावना नहीं होती।

सीता की खोज करते-करते जब हनुमान रावण के अन्तःपुर में पहुँचते हैं तो उन्हें रावण की रानियों के बीच भ्रमण करते हुए भी कुछ संकोच नहीं होता। ये रावण की रंगशाला में नाचती-गाती हुई किन्नरियों को और राजशाला के वैभव को खुली आँखों से निःसंकोच देखते हैं।

अंगद—रामचन्द्रिका में अंगद के चरित्र की केवल एक ही विशेषता विशेष रूप से उभर कर आई हे और वह है इनकी वाग्विदग्धता। अंगद बातचीत करने में इतने पटु हैं कि इनके सामने रावण की सारी चालें असफल हो जाती हैं। राम का सन्देश रावण को देने से पूर्व ये राम की वीरता का वर्णन करते हैं—

'श्रीरघुनाथ को बानर केसव आयो हो एक न काहू हयो जू।
सागर को मद झारि चिकारि त्रिकूट की देह बिहारि गयो जू॥
सीय निहारि संहारि कै राच्छस सोक असोक बनोहि दयो जू।
अच्छ कुमारहि मारिकै लंकहि जारिकै नीकेहि जात भयो जू॥

किसी भी राजदूत की सबसे महान विशेषता यही है कि वह शत्रु-पक्ष पर अपने राजा का प्रभुत्व स्थापित कर दे अथवा उसकी वीरता का गुण-गान करके उसके मन में भय का संचार करने का प्रयास करे। कहने की आवश्यकता नहीं कि अंगद अपने दौत्यकर्म में सर्वरूपेण सफल हैं।

अंगद के चरित्र की दूसरी विशेषता है निर्भयता। रावण के दरबार में अकेले अंगद जिस निर्भीकता से बातें करते हैं और रावण की भर्त्सना करते हैं, वह किसी साधारण दूत का साहस नहीं है।

राम के प्रति अंगद के हृदय में अगाध भक्ति है। जब रावण अंगद को यह कहकर भड़काना चाहता है कि राम ने तुम्हारे पिता वध किया है, अतः तुम्हें तो उससे बदला लेना चाहिए तो अंगद कितनी कुशलता से उत्तर देते हैं—

'इनको बिलगु न मानिये, कहि केसव पल आधु।
पानी पावक पवन प्रभु, ज्यों असाधु त्यों साधु॥'

अतः कह सकते हैं कि अंगद का चरित्र रामचन्द्रिकाकार के हाथों में भी महान् ही बना रहा है।

रावण—रावण का चरित्र परम्परागत है। इसमें रामचन्द्रिकाकार ने किसी प्रकार की विशेषता का समावेश नहीं किया। वाल्मीकि और तुलसी के रावण की भांति केशव का रावण भी शक्ति-सम्पन्न है जिसकी दासता में सारे देवता बँधे हुए हैं। रावण उसी भाँति अहंकारी और हठी है जिस प्रकार तुलसी का रावण। अतः कहा जा सकता है कि रावण का चरित्र-चित्रण परम्परागत ही है।

सीता—राम के चरित्र की भाँति केशव सीता के आदर्श चरित्र की भी रक्षा नहीं कर सके हैं। भारतीय आदर्श के अनुसार पत्नी को पति के चरण-चिन्हों को बचाकर चलना चाहिए, इसीलिए तुलसी की सीता अत्यन्त सतर्क होकर चलती है—

'प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरहि चरण मग चलत सभीता।'

किन्तु केशव की सीता तो जान-बूझकर राम के चरण-चिन्हों पर अपने पैर रखती है—

'मारग की रज तापित है अति, केसव सीतहिं सीतल लागति।
प्यो पद पंकज ऊपर पायनि, दै जु चले तेहि ते सुखदायिनि॥

केशव की सीता राम से अपनी सेवा करवाने में भी संकोच नहीं करती। जब वन जाते समय वे थक कर बैठ जाती हैं तो राम अपने वल्कल वस्त्र से सीता की हवा करने लगते हैं जिसका प्रत्युत्तर सीता चंचल चित्तवन से देती है—

'कहूँ बाग तडाग तरंगिनी तीर तमाल की छांह बिलोकि भली।
घटिका यक बैठत हैं सुख पाय बिछाय तहाँ कुस कास थली।
मग को स्रम श्रीपति दूर करैं सिय को सुभ बाकल अंचल सों।
स्रम तऊ हरैं तिनको कहि केसवं चंचल चारु दृगचल सों।'

केशव की सीता वीणा बजाने में भी बहुत निपुण है। अपनी वीणा से वे राम को प्रसन्न करके दुखों को दूर कर देती हैं—

'जब जब धरि बीना प्रकट प्रवीना वहु गुन लीना सुख सीता।
पिय जियहि रिझावै दुखनि भजावै बिबिध बजावै गुन गीता।'

सीता के सौन्दर्य और विरह का वर्णन रीतिकालीन नायिकाओं की भांति किया गया है जिसके कारण सीता में वह मर्यादा नहीं रह पाई जिसका वर्णन गोस्वामी तुलसीदास ने किया है। हाँ, एक बात अवश्य है। तुलसी की सीता की भांति केशव की सीता भोली नहीं है। केशव की सीता हनुमान की भली प्रकार परीक्षा करके ही विश्वास करती है।

रामचन्द्रिका के उत्तरार्द्ध में सीता का चरित्र और भी अधिक विकृत हो गया है। वे राम के साथ विलासी नारी की भांति लगी फिरती है। वाल्मीकि और तुलसी ने सीता के चरित्र में जिस महान् आदर्श की स्थापना करके सीता को भारतीय नारियों का आदर्श बना दिया, केशव ने उस आदर्श की ओर से आँखें बंद करके सीता के चरित्र का मनमाना चित्रण किया है। राम की भक्ति के लिए रामचन्द्रिका लिखने वाले कवि का यह दोष अक्षम्य है।

रामचन्द्रिका में चित्रित चरित्रों की देखने से दो बातें स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। पहली बात तो यह है कि केशव इन पात्रों की उस मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने में असमर्थ रहे हैं जो परम्परा से जनता में प्रचलित है। इसी कारण राम और सीता के चरित्र अपने स्तर से बहुत नीचे गिर गये हैं। दूसरी बात यह है कि इन पात्रों का स्वतन्त्र अस्तित्व कम है। कवि की चमत्कारवादी प्रवृत्ति इन पर अपना अंकुश जमाये हुए है जिसके कारण कवि राम की उपमा उलूक से देने से भी नहीं हिचकिचाया। अतः यह कहने में हमें तनिक भी संकोच नहीं कि रामचन्द्रिका में पात्रों के जिस चरित्र-चित्रण की अपेक्षा थी, केशव उसे प्रस्तुत करने में ही असफल रहे हैं।